



**DEEN-E-NABI** صلی اللہ علیہ وسلم

whatsapp ग्रुप में एड होने के लिए इन  
नम्बर पर JOIN लिख के मेसेज कीजिये

9723 654 786

9033 503 799

# बरकती दिन व राते फेहरिस

उन्वान	सफा
आशुरा की दुआ	1
आशुरा के नवाफिल	3
शबे मेअराज के नवाफिल	6
शबे बअरात के नवाफिल	8
यासीन शरीफ	9
शाबान की दुआ	16
शबे कद्र के नवाफिल	20
नमाज़े जनाज़ाका करीका	24

लीखने मे कीसी जगह गलती हो तो इत्तला दे कर षवाब हासील करे

9723 654 786

## आशूराकी दुआ

बेशक ज़िन्दगी और मौत अल्लाह तआला ही के दस्ते कुदरतमे है। लेकीन रब तआला अपने फज़लो करम से अपने महबुब बंदोकी दुआओ को हमेशा इज़ज़त अता फरमाता है। दुआअे आशुराको जो भी मुसलमान नीचे लीखवी हुइ तरकीबसे सच्चे दीलसे पठहेगा, वो पूरा साल मौतके सदमेसे महफुज़ रहेगा इन्शाअल्लाह, और आनेवाला आशुरा झरूर देखेगा। जीस साल उसकी मौत लीखवी होगी, उस साल वो शख्स ये दुआ कीसी भी बहानेसे नही पठह सकेगा। पहले सात मरतबा ये दुआ पढहे,

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ○

سُبْحَانَ اللَّهِ مِلْءَ الْمِيزَانِ وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ وَمَبْلَغِ  
الرِّضَاءِ ○ وَزِنَةَ الْعَرْشِ وَلَا مَلْجَأَ وَلَا مَنْجَأَ مِنْ اللَّهِ إِلَّا  
إِلَيْهِ ○ سُبْحَنَ اللَّهُ عَدَدَ شَفْعٍ وَالْوَتْرِ وَعَدَدَ الْكَلِمَاتِ  
التَّامَّاتِ وَاسْأَلُهُ السَّلَامَةَ بِرَحْمَتِهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ  
إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ○ وَهُوَ حَسْبِي وَنِعْمَ الْوَكِيلُ  
وَنِعْمَ الْمَوْلَى وَنِعْمَ النَّصِيرُ ○ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى خَيْرِ خَلْقِهِ

مُحَمَّدٍ وَآلِهِ أَجْمَعِينَ ○

फीर १० मरतबा ये दूरूद शरीफ पढे

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا  
صَلَّيْتَ عَلَى سَيِّدِنَا إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا إِبْرَاهِيمَ

إِنَّكَ حَمِيدٌ مُّجِيدٌ ○ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى  
 آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ وَعَلَى  
 آلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مُّجِيدٌ ○

फीर हाथ उठाकर ये दुआ अेक मर्तबा पढे

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○  
 يَا قَابِلَ تَوْبَةِ اٰدَمَ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ ○  
 يَا فَارِخَ كَرْبِ ذِي النُّونِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ ○  
 يَا جَامِعَ شَمْلِ يَعْقُوْبَ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ ○  
 يَا سَامِعَ دَعْوَةِ مُوسٰى وَهٰرُونَ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ ○  
 يَا مُغِيْثَ اِبْرَاهِيْمَ مِنَ النَّارِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ ○  
 يَا رَافِعَ اِدْرِيسَ اِلَى السَّمَاءِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ ○  
 يَا مُجِيْبَ دَعْوَةِ صَالِحٍ فِى النَّاقَةِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ ○  
 يَا نَاصِرَ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ  
 يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ ○

يَا رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَرَحِيْمَهُمَا  
 صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ  
 وَصَلِّ عَلَى جَمِيْعِ الْأَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَاقْضِ

حَاجَاتِنَا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَطْلَ عُمُرَنَا  
 فِي طَاعَتِكَ وَمَحَبَّتِكَ وَرِضَاكَ وَأَحْيَا حَيَوَةً طَيِّبَةً  
 وَتَوَقَّنَا عَلَى الْإِيْمَانِ وَالْإِسْلَامِ بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ  
 الرَّاحِمِينَ ○ اَللّٰهُمَّ بِعِزِّ الْحَسَنِ وَآخِيهِ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ  
 وَجَدِّهِ وَبَنِيهِ فَرِّجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيهِ ○

मदनी पंजसुरह, ३२३

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○  
 اَللّٰهُمَّ بِعِزِّ الْحَسَنِ وَآخِيهِ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ وَجَدِّهِ وَبَنِيهِ  
 فَرِّجْ عَنَّا مَا نَحْنُ فِيهِ وَصَلِّ اللّٰهُ عَلَى خَيْرِ خَلْقِهِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ  
 ○ وَاللهِ أَجْمَعِينَ ○

उसके बाद २ रकअत नमाज़ नफल पढ़े। हर रकअतमे अल्हम्दो शरीफ के बाद १० मरतबा कुल्लुहुल्लाह पढ़े। सलाम के बाद आयतुल-कुर्सी और दुरूद शरीफ ११-११ मरतबा पढ़े। और हज़रत सैयदना इमाम आली मुकाम और शोहदाअे करबलाकी अरवाहको पहुंचाअे। (अगर अस्स्की नमाज़ के बाद ये दुआअे पढ़े, तो नफल नमाज़ न पढ़े। कयुंकी अस्स् की नमाज़ के बाद नफल नमाज़ पढ़ना मना है।)

### आशुराके नवाफिल

- आशुराके दीन २ रकात नमाज़ नफल तहिय्यतुल-वुजूकी निय्यसे पढ़े। पहली रकअतमे अल्हम्दो शरीफ के बाद आयातुल-कुर्सी या

सूरअे काफेरून पढे। और दुसरी रकअतमे अल्हम्दो शरीफ के बाद कुल्हुवल्लाह शरीफ पढे।

➤ ४ रकअत नमाज़ नफल अेक सलाम से पढे। हर रकअतमे अल्हम्दो शरीफ के बाद ५० मरतबा कुल्हुवल्लाह शरीफ पढे। अल्लाह तआला इस नामज़ के पढनेवाले के ५० साल के आगेके और ५० सालके पीछेके गुनाह माफ कर देगा और उसके लिये मलअे आलामे नूरका मिम्बर बिछाया जाअेगा, जो उसे अता किया जाअेगा।

➤ ४ रकअत नमाज़ अेक सलामसे पढे। हर रकअतमे अल्हम्दो शरीफ के बाद १५ मरतबा कुल्हुवल्लाह शरीफ पढे। नमाज़ से फारीग हो कर इस नमाज़का षवाब हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन (रदियल्लाहो अन्होमा) की बारगाहमे पहुँचाअे। तो वो दोनों हज़रात इस नमाज़के पढनेवालेकी कयामतके दीन शफाअत फरमाअेंगे। हज़रत इमाम शिब्ली (रदियल्लाहो अन्हो)ने ये नमाज़ पढी, तो उनके ख्वाबमे आ कर इन दोनों हज़रातने मुबारकबादी पेश की, के तुमने इस नमाज़का षवाब हमको पहुँचाया है, तो कयामत के दीन हम तुम्हारी शफाअत करके तुम्हे जन्नतमे ले जाअेंगे। बल्के जो कोइ भी पढेगा, उसकी शफाअत करेंगे।

➤ ४ रकअत नमाज़ नफर २-२ रकअतमे अल्हम्दो शरीफ के बाद ५ मरतबा कुल्हुवल्लाह शरीफ पढे। और उसका षवाब हुज़ूर(सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम)की रूहे मुबारकको नज़र करे।

➤ ४ रकअत नमाज़ नफल २-२ करके पढे हर रकअत मे अल्हम्दो शरीफ के बाद ३ मरतबा कुल्हुवल्लाह शरीफ पढे। और उसका

षवाब सय्येदा फातेमा(रदियल्लाहो अन्हा)की रूहे मुबारकको नज़र करे।

- ४ रकतअत नमाज़ नफल २-२ रकअत करके पढे। हर रकअत मे **अल्हम्दो शरीफ** के बाद ५ मरतबा **कुल्हुवल्लाह शरीफ** पढे। और उसका षवाब सय्यदेना हज़रत इमाम हसन और सय्यदेना हज़रत इमाम हुसैन(रदियल्लाहो अन्होमा)की मुबारक रूहोंको नज़र करे।
- ६ रकतअत नमाज़ नफल २-२ रकअत करके पढे। हर रकअत मे **अल्हम्दो शरीफ** के बाद तरतीबसे(क्रमवार) सूरते पढे। नमाज़से फारीग होनेके बाद सजदेमे ७ मरतबा **कुल या अय्युहल-काफेरून** की सूरत पढे। और उसका षवाब शोहदाओ करबलाकी रूहोंको नज़र करे।
- ४ रकतअत नमाज़ नफल २-२ रकअत करके पढे। हर रकअत मे **अल्हम्दो शरीफ** के बाद ३ मरतबा **कुल्हुवल्लाह शरीफ** पढे। और उसका षवाब तमाम हकदारोंकी रूहोको बख्शे।
- २ रकतअत नमाज़ नफल पढे। हर रकअत मे **अल्हम्दो शरीफ** के बाद ३ मरतबा **कुल्हुवल्लाह शरीफ** पढे। और उसका षवाब तमाम मुसलमानोकी रूहोको बख्शे।
- २ रकतअत नमाज़ नफल पढे। हर रकअत मे **अल्हम्दो शरीफ** के बाद ३ मरतबा **कुल्हुवल्लाह शरीफ** पढे। नमाज़ के बाद बैठ कर ७० मरतबा **हस्बोनल्लाहो व नेअ्मल् वकील व नेअ्मल् मौला व नेअ्मन्नसीर** पढ कर इमानकी सलामतीके लिये दुआ करे।
- २ रकतअत नमाज़ नफल पढे। हर रकअत मे **अल्हम्दो शरीफ** के बाद ३ मरतबा **कुल्हुवल्लाह शरीफ** पढे। और उसका षवाब मर्हूम मां-बाप की रूहोको बख्शे।

## शबे मेअराजके नवाफिल

- शबे मेअराजमे २-२ करके १२ रकअत नमाज़ नफल पढे। हर रकअत मे अल्हम्दो शरीफ के बाद ३ मरतबा कुलहुवल्लाह शरीफ पढे। सलाम के बाद १२५ मरतबा दुरूद शरीफ पढे।
- २ रकअत नमाज़ नफल पढे। पहली रकमअमे अल्हम्दो शरीफ के बाद आयतुल-कुर्सी पढे। और दुसरी रकअत मे अल्हम्दो शरीफ के बाद ल-कद् जा-अकुम् पढे। नमाज़ के बाद १०० मरतबा इस्तिगफार पढे।

ल-कद् जा-अकुम्

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ  
حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ فَإِنْ تَوَلَّوْا  
فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ، لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ  
الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

(पा, ११, सु, ९, आ, १२९)

इस्तिगफार

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ  
وَأَتُوبُ إِلَيْهِ ۝

**तरजुमा :** में उस अजीम अल्लाह तआला से गुनाहो की माफी मांगता हु, जिसके सीवा कोइ माअबुद नही, जो जीन्दा हे, क्यम हे, और मे इससे तौबा करता हु।



- १२ रकअत नमाज़ २-२ रकअत करके पढ़े। हर रकअत में अल्हम्दो शरीफ के बाद ५ मरतबा कुलहुवल्लाह शरीफ पढ़े। सलाम के बाद १०० मरतबा ये कल्मा पढ़े।

○ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ ○

- ४ रकअत नमा २-२ करके पढ़े। हर रकअत में अल्हम्दो शरीफ के बाद ७ मरतबा कुलहुवल्लाह शरीफ पढ़े। सलाम के बाद कलमअे तमज़ीद १०० मरतबा पढ़े।

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ

○ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ○

- २ रकअत नमाज़ पढ़े। हर रकअत में अल्हम्दो शरीफ के बाद ३ मरतबा सूरअे काफेरून पढ़े।
- २७ रजबका रोज़ा रखवे।
- हो सके तो इस रातमें सलातुत्तस्बीह भी पढ़े। इसकी बड़ी फज़ीलत है।

चार रकात नीफल इस तरह पठो के सुब्हानकल्लाहुम के बाद १५ बार

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ

सुब्हानल्लाहे वल-हम्दोलिल्लाहे व लाइलाहा इलल्लाहो वल्लाहो अकबर पढ़े अउज़ो, बिस्मिल्लाह, अल्हमदो और कोइ सुरह पठनेके बाद येही तस्बीह १० बार पठकर रूकुअमे जायें, सुब्हान रब्बीयल अज़ीम पळहने के बाद रूकुअमे येही तस्बीह १० बार पढ़े

फीर सीधे खडे होकर १० बार येही तस्बीह पढे,  
 फीर सजदेमे सुब्हान रब्बीयलआअला के बाद सजदेमे येही तस्बीह १०  
 बार पढे,  
 फीर सजदेमे से सर उठकर १० बार,  
 फीर दुसरे सजदेमे १० बार।

(कुल ७५ बार अेक रकातमे तस्बीह होगी दुसरी रकातमे अल्हम्दोसे  
 पहले १५ बार येही तस्बीह पढे, फीर आगे उपरकी तरकीबसे चार  
 रकात पुरी करें)

### शबे बरात के नवाफिल

➤ जो शख्स शबे बरातमे इबादतकी नीय्यत से गुस्ल करेगा, उसके  
 जीस्मसे टपकनेवाले हर कतरेके बदले उसे ७०० रकआत नफल  
 नमाज़ पठनेके बराबर षवाब मीलेगा। गुस्ल के बाद २ रकआत  
 नमाज़ तहिय्यतुल-वुजुकी नीय्यतसे पढे। हर रकआत मे **अल्हम्दु  
 शरीफ** के बाद ३ मरतबा **आयतुल-कुर्सी** और ३ मरतबा  
**कुल्हुवल्लाह शरीफ** पढे।

➤ शबे बरातमे मगरीबसे पहले ४० मरतबा **ला हौला बला कुव्वत  
 इल्ला बिल्लाहिल् अलियिल् अज़ीम** और १०० मरतबा **दुरूद शरीफ**  
 पढे।

फीर मगरीब की नमाज़ के बाद २-२ रकआत करके ६ रकआत  
 नमाज़ नफल पढे

पहली २ रकआत शुरू करने से पहले अर्ज़ कीजीये : या अल्लाह !  
 इन दो रकअतो की बरकत से मुझे **खैरो बकरत के साथ उम्र  
 दराज़ी** अता फरमा।

दुसरी २ रकआत शुरू करने से पहले अर्ज़ कीजीये : या अल्लाह !  
 इन दो रकअतो की बरकत से **बलाओ से मेरी हीफज़त** फरमा।

तीसरी २ रकआत शुरू करने से पहले अर्ज कीजीये : या अल्लाह ! इन दो रकअतो की बरकत से मुझे सीर्फ अपना मोहताज रख और गैरो की मोहताजी से बचा।

हर २ रकआत के बाद १ मरतबा यासीन शरीफ और १ मरतबा शाबानकी दुआ पढे।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَسَّ ۝ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّا أُنْذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ۝ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَى أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّا جَعَلْنَا فِي آعْنَاقِهِمْ أَغْلَالًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ۝ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝ وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنْذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِغُفْرَةٍ وَأَجْرٍ

كَرِيمٌ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا  
 وَآثَارَهُمْ ۖ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ۝  
 وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ ۖ إِذْ جَاءَهَا  
 الْمُرْسَلُونَ ۝ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا  
 بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ ۝ قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا  
 بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۖ وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ ۖ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا  
 تَكْذِبُونَ ۝ قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُم لَمُرْسَلُونَ ۝ وَمَا  
 عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاةُ الْمُبِينُ ۝ قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۖ لَئِنْ لَمْ  
 تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ قَالُوا  
 طَائِرُكُم مَّعَكُمْ ۖ أَيْنَ دُكِّرْتُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ  
 مُّسْرِفُونَ ۝ وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَىٰ قَالَ  
 يَاقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ۖ اتَّبِعُوا مَن لَّا يَسْأَلْكُمْ أَجْرًا

وَهُمْ مُّهِتَدُونَ ﴿٢١﴾ وَمَا لِي لَا أَعْبُدُ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ  
تَرْجِعُونَ ﴿٢٢﴾ أَأَتَّخِذُ مِنْ دُونِهِ إِلَهًا إِنْ يُرِدْنِ الرَّحْمَنُ  
بِضَرٍّ لَا تُغْنِ عَنِّي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُونِ ﴿٢٣﴾ إِنِّي  
إِذَا لَفِئْتُ ضَلَلٍ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾ إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمِعُونِ ﴿٢٥﴾  
قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ﴿٢٦﴾ قَالَ يَلَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾ بِمَا  
غَفَرْتُ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٨﴾ وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى  
قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا  
مُنْزِلِينَ ﴿٢٩﴾ إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ  
خَامِدُونَ ﴿٣٠﴾ يَحْسِرَةُ عَلَى الْعِبَادِ ﴿٣١﴾ مَا يَأْتِيهِمْ مِّن رَّسُولٍ  
إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٢﴾ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ  
مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٣٣﴾ وَإِنْ كُلٌّ لَّهَا  
جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٣٤﴾ وَآيَةٌ لَهُمُ الْأَرْضُ الْبَيْتَةُ ۖ

أَحْيَيْنَهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَبْنَاهُ يَأْكُلُونَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلْنَا  
 فِيهَا جَنَّاتٍ مِّنْ نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مَنِ  
 الْعُيُونِ ﴿٣٤﴾ لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ ۖ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا  
 يَشْكُرُونَ ﴿٣٥﴾ سُبْحَنَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْبِتُ  
 الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾ وَآيَةٌ لَهُمُ  
 اللَّيْلُ ۖ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ ﴿٣٧﴾  
 وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ۖ ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ  
 الْعَلِيمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ قَدَرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ  
 الْقَدِيمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا  
 اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۖ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٤٠﴾ وَآيَةٌ لَهُمُ  
 أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمُ فِي الْفُلِكِ الْمَشْحُونِ ﴿٤١﴾ وَخَلَقْنَا لَهُمُ  
 مِّنْ مِّثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ﴿٤٢﴾ وَإِنْ نَّشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ

لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَدُونَ<sup>٣٦</sup> إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَى  
حِينٍ<sup>٣٧</sup> وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا  
خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ<sup>٣٨</sup> وَمَا تَأْتِيهِمْ مِّنْ آيَةٍ مِّنْ  
آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ<sup>٣٩</sup> وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ  
انْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ<sup>٤٠</sup> قَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ  
أَمَنُوا انْطَعِمُوا مَن لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ أَطْعَمَهُ<sup>٤١</sup> إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا فِي  
ضَلَالٍ مُّبِينٍ<sup>٤٢</sup> وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ  
صَادِقِينَ<sup>٤٣</sup> مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ  
وَهُمْ يَخِصِّمُونَ<sup>٤٤</sup> فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَى  
أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ<sup>٤٥</sup> وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُمْ مِّنْ  
الْأَجْدَاثِ إِلَى رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ<sup>٤٦</sup> قَالُوا يَوْمَئِذٍ لَّكَ مِنْ بَعْثِنَا  
مِنْ مَّرْقَدِنَا هَذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ

الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٦﴾ إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ  
 جَمِيعٌ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٧﴾ فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا  
 تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٨﴾ إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ  
 فِي شُغْلٍ فَكِهُونَ ﴿٥٩﴾ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلَالٍ عَلَى  
 الْأَرَائِكِ مُتَكِنُونَ ﴿٦٠﴾ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَّا  
 يَدَّعُونَ ﴿٦١﴾ سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِيمٍ ﴿٦٢﴾ وَامْتَازُوا  
 الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٦٣﴾ أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَبْنَىٰ أَدَمَ أَنْ  
 لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٤﴾ وَأَنْ  
 اعْبُدُونِي ۚ هَذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦٥﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ  
 جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٦﴾ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي  
 كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٧﴾ إَصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٨﴾  
 الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ



أَرْجُلُهُمْ بِهَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٥﴾ وَكُوْا نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَى  
 أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنَّى يُبْصِرُونَ ﴿١٦﴾ وَكُوْا نَشَاءُ  
 لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا  
 يَرْجِعُونَ ﴿١٧﴾ وَمَنْ تُعَذِّبْهُ نُغَشِّهِ فِي الْخَلْقِ أَفَلَا  
 يَعْقِلُونَ ﴿١٨﴾ وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ؕ إِنْ هُوَ إِلَّا  
 ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُبِينٌ ﴿١٩﴾ لِيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحَقِّقَ الْقَوْلُ  
 عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢٠﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِنَّا عِجْلًا  
 أَيْدِيَنَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مِلْكُونَ ﴿٢١﴾ وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا  
 رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ﴿٢٢﴾ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ  
 أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّهُمْ  
 يَبْصُرُونَ ؕ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَلَا هُمْ لَهُمْ جُنْدٌ  
 مُّحْضَرُونَ ﴿٢٤﴾ فَلَا يَحْزَنُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسْرُونَ

وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٤٦﴾ أَوَلَمْ يَرِ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ  
فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ﴿٤٧﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسَى  
خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ يُؤْتِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٤٨﴾ قُلْ  
يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ  
عَلِيمٌ ﴿٤٩﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا  
أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقِدُونَ ﴿٥٠﴾ أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ  
وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ ۖ وَهُوَ  
الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿٥١﴾ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ  
كُنْ فَيَكُونُ ﴿٥٢﴾ فَسُبْحَانَ الَّذِي فِي يَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ  
شَيْءٍ ۖ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٥٣﴾

शाबानकी दुआ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ○

اللَّهُمَّ يَا ذَا الْبَيْنِ وَلَا يُمْنُ عَلَيْهِ، يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ  
 يَا ذَا الطُّوْلِ وَالْإِنْعَامِ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ ظَهَرَ اللَّاجِئِينَ،  
 وَجَارُ الْمُسْتَجِيرِينَ، وَأَمَانُ الْخَائِفِينَ، اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ  
 كَتَبْتَنِي عِنْدَكَ فِي أَمْرِ الْكِتَابِ شَقِيًّا أَوْ مَحْرُومًا أَوْ  
 مَطْرُودًا أَوْ مُقْتَرًّا عَلَى فِي الرِّزْقِ فَاْمُحْ اللَّهُمَّ بِفَضْلِكَ  
 شَقَاوَتِي وَحِرْمَانِي وَطَرْدِي وَاقْتِتَارَ رِزْقِي، وَأَشْبِثْنِي  
 عِنْدَكَ فِي أَمْرِ الْكِتَابِ سَعِيدًا مَرْرُوقًا مُوَفَّقًا لِلْخَيْرَاتِ،  
 فَإِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ فِي كِتَابِكَ الْمُنْزَلِ، عَلَى لِسَانِ  
 نَبِيِّكَ الْمُرْسَلِ، يَمْحُوا اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثَبِّتُ وَعِنْدَهُ أُمُّ  
 الْكِتَابِ إِلَهِي بِاتَّجَلَى الْأَعْظَمِ، فِي لَيْلَةِ النِّصْفِ مِنْ شَهْرِ  
 شَعْبَانَ الْمُبَكَّرِ، الَّتِي يُفَرِّقُ فِيهَا كُلَّ أَمْرٍ حَكِيمٍ  
 وَيُبْرِمُ، أَنْ تَكْشِفَ عَنَّا مِنَ الْبَلَاءِ وَالْبَلَوَاءِ مَا نَعْلَمُ  
 وَمَا لَا نَعْلَمُ، وَأَنْتَ بِهٍ أَعْلَمُ، إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ،  
 وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ  
 وَسَلَّمُ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ○

बिस्मिल्लाह हिरहमानरिहीम

तरजमा : अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला। अय  
 अल्लाह ! अय अहेसान करने वाले कि जिस पर अहेसान नही किया जाता ! अय बडी

शानो शौकत वाले ! अय फजलो इन्आम वाले ! तेरे सिवा कोई माअबुद नहीं। तू परेशान हालो का मददगार, पनाह मांगने वालो को पनाह ओर खौफजदो को अमान देने वाला है। अय अल्लाह! अगर तू अपने यहां **उम्मुल किताब** (लौहे महफूज) में मुझे शकी (बद बख्त), महरूम, धुत्कारा हुवा और रिजक मे तंगी दिया हुवा लिख चुका हो तो अय अल्लाह! अपने फजल से मेरी बद बख्ती, महरूमी, जिल्लत और रिजक की तंगी को मिटा दे और अपने पास उम्मुल किताब में मुझे खुश बख्त रिजक दिया हुवा और भलाइयो की तौफीक दिया हुवा सब्त (तहरीर) फरमा दे। कि तूने ही तेरी नाजिल की हुइ किताब मे तेरी ही भेजे हुअे नबी ﷺ की ज़बान पर फरमाया और तेरा (येह) फरमाना हक है कि, अल्लाह जो चाहे मिटाता है और साबित करता (लिखता) है और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है। (हवाला : कन्जुल इमान, १३)

खुदाया अल्लाह! तजल्लिये आजम के वसीले से जो निस्फे शाबानुल मुकर्रम की रात मे है कि जिस में बांट दिया जाता है जो हिकमत वाला काम और अटल कर दिया जाता है। या अल्लाह! मुसीबतो और रन्जिशो को हम से दुर फरमा कि जिन्हे हम जानते और नहीं भी जानते जब कि तु इन्हे सब से ज़ियादा जानने वाला है। बेशक तु सब से बढ कर अज़ीज़ और इज़ज़त वाला है। अल्लाह हमारे सरदार मुहम्मद ﷺ पर और आप ﷺ के आलो अस्हाब पर दुरूदो सलाम भेजे। सब खूबियां सब जहानो के पालने वाले अल्लाह के लिये है।

हवाला : मदनी पन्जसुरह, ३३५

इस रात मे ४ रकआत नमाज़ पढे। हर रकआत मे **अल्हम्दु शरीफ** के बाद ५० मरतबा **कुल्हुवल्लाह** पढे। और १५ शाबान के दीन का रोझा रखे।

- १२ रकआत नमाज़ पढे। हर रकआत मे **अल्हम्दु शरीफ** के बाद १० मरतबा **कुल्हुवल्लाह** पढे। तो उसके गुनाह मआफ होंगे और उम्रमे बरकत होगी।
- १४ रकआत नमाज़ पढे। हर रकआत मे **अल्हम्दु शरीफ** के बाद जो सूरत चाहे पढे। नमाज़ से फारिग होकर दुआ मांगे। तो कुबूल होंगी। इन्शा अल्लाह तआला

- १०० रकआत नमाज़ पढ़े। हर रकआत में **अल्हम्दु शरीफ** के बाद १० मरतबा **कुल्लहुवल्लाह** पढ़े। हज़रत ख्वाजा हसर बसरी (रदीयल्लाहो अन्हो) फरमाते हैं के मुझसे हुजुर (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) के ३० सहाबाने बयान किया के जो शख्स ये नमाज़ पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसकी तरफ ७० मरतबा देखेगा। और हर मरतबा उसकी ७० हाजते पूरी फरमायेगा। सबसे अदना (छोटी) हाजत उसके गुनाहोंकी मगफ़ेरत है।
- हो सके तो इस रातमें **सलातुत्तस्बीह** भी पढ़े। इसकी बड़ी फज़ीलत है।

चार रकात नीफल इस तरह पढ़ो के सुब्हानकल्लाहुम के बाद १५ बार

**سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ**

सुब्हानल्लाहे वल-हम्दोलिल्लाहे व लाइलाहा इलल्लाहो वल्लाहो अकबर पढ़े अउज़ो, बिस्मिल्लाह, अल्हमदो और कोई सुरह पढ़नेके बाद येही तस्बीह १० बार पढ़कर रूकुअमे जायें, सुब्हान रब्बीयल अज़ीम पढ़ने के बाद रूकुअमे येही तस्बीह १० बार पढ़े फीर सीधे खड़े होकर १० बार येही तस्बीह पढ़े, फीर सजदेमें सुब्हान रब्बीयलआअला के बाद सजदेमें येही तस्बीह १० बार पढ़े, फीर सजदेमें से सर उठकर १० बार, फीर दुसरे सजदेमें १० बार।

(कुल ७५ बार अेक रकातमे तस्बीह होगी दुसरी रकातमे अल्हम्दोसे पहेले १५ बार येही तस्बीह पढे, फीर आगे उपरकी तरकीबसे चार रकात पुरी करें)

### शबे कद्र

- इस रातमे नवाफील पढना, कुर्आन मज्जदकी तीलावत करना और तस्बीह व तहलील करना और इस्तगफार पढना चाहीये। जो कोइ शबे कद्रमे इबादतकी निय्यत से गुस्ल करेगा, उसकी बख्शिाश हो जाऐगी। इस रातमे जतने नवाफील पढे जा सके, बळी सआदत है। शबे कद्र के कुछ नवाफील ये है।
- तहिय्यतुल-वुजुकी नीय्यतसे २ रकआत पढे। हर रकआत मे **अल्हम्दु शरीफ** के बाद १ मरतबा **आयतुल-कुर्सी** और ३ मरतबा **कुल्हुवल्लाह शरीफ** पढे। तो वुजुके पानीके हर कतरेके बदले ७०० रकआत नफल पढनेका षवाब मीलेगा।
- ४ रकआत नमाज पढे। हर रकआत मे **अल्हम्दु शरीफ** के बाद १ मरतबा **इन्ना अन्जलना(सूरअे कद्र)** और २७ मरतबा **कुल्हुवल्लाह शरीफ** पढे। तो अल्लाह तआला इस नमाज की बरकतसे तमाम गुनाह मुआफ फरमा देगा और जन्नतमे जगह इनायत फरमाऐगा।
- ४ रकआत नमाज पढे। हर रकआत मे **अल्हम्दु शरीफ** के बाद ३ मरतबा **इन्ना अन्जलना(सूरअे कद्र)** और ७ मरतबा **कुल्हुवल्लाह शरीफ** पढे। तो अल्लाह तआला मौतकी सकरात आसान फरमाऐगा और कब्रके अजाबसे बचाऐगा।
- २ रकआत नमाज पढे। हर रकआत मे **अल्हम्दु शरीफ** के बाद ७ मरतबा **इन्ना अन्जलना(सूरअे कद्र)** और ७ मरतबा **कुल्हुवल्लाह शरीफ** पढे। सलाम फेरने के बाद **इस्तीगफार** और **दुरूद शरीफ**

तो अल्लाह तआला इस नमाज़ पढ़नेवालेको और उसके मां-बापको बख्शा देगा।

## أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ ○

- २ रकआत नमाज़ पढ़े। हर रकआत में अल्हम्दु शरीफ के बाद ७ मरतबा कुलहुवल्लाह शरीफ पढ़े। सलाम के बाद ७ मरतबा इस्तिगफार पढ़े तो अपनी जगहसे नहीं उठेगा के उस पर और उसके मां-बाप पर रहमते खुदा बरसनी शुरू हो जायेगी।
- ४ रकआत नमाज़ पढ़े। हर रकआत में अल्हम्दु शरीफ के बाद १ मरतबा इन्ना अन्जलना (सूरअे कद्र) और २७ मरतबा कुलहुवल्लाह शरीफ पढ़े। तो ये शख्स गुनाहोसे अैसा पाक हो जायेगा के गोया आज ही अपनी मां के पेटसे पैदा हूवा हो और उसको अल्लाह तआला जन्नतमे १००० महल अता फरमायेगा।
- २ रकआत नमाज़ पढ़े। हर रकआत में अल्हम्दु शरीफ के बाद १ मरतबा इन्ना अन्जलना (सूरअे कद्र) और ३ मरतबा कुलहुवल्लाह शरीफ पढ़े। तो अल्लाह तआला उसको शबे कद्रका षवाब अता फरमायेगा और उसके नफल कबुल फरमायेगा। और उसको हज़रत इद्रीस, हज़रत शोअैब, हज़रत अैयुब, हज़रत दाउद और हज़रत नूह (अला नबीय्येना व अलैहिस्सलाम) का षवाब अता फरमायेगा। और जन्नतमे मशरीक से मगरीब तक अेक शहर इनायत फरमायेगा।
- ४ रकआत नमाज़ पढ़े। हर रकआत में अल्हम्दु शरीफ के बाद ३ मरतबा इन्ना अन्जलना (सूरअे कद्र) और ५० मरतबा कुलहुवल्लाह शरीफ पढ़े। नमाज़ के बाद सजदेमे जा कर १ मरतबा सुब्हानल्लाहे

वलहमदो लिल्लाहे वला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर पढे। फिर उसके बाद जो दुआ मांगे वो कबुल होगी और उसे अल्लाह तआला बेशुमार नेअमते अता फरमाओगा और उसके सब गुनाह बख्श देगा।

➤ ४ रकआत नमाज़ पढे। हर रकआत मे अल्हम्दु शरीफ के बाद १ मरतबा **सूरअे तकापुर** याने **अल्हाकुमुत्-तकापुर** और ११ मरतबा **कुल्हुवल्लाह शरीफ** पढे। तो अल्लाह तआला उसके लीये मौतकी सकरात आसान फरमाओगा और कब्रके अज़ाबसे बचाओगा और नुरके ४ अैसे सुतून अता फरमाओगा, के हर सुतूनमे १००० महल होंगे।

➤ २० रकआत नमाज़ पढे। हर रकआत मे अल्हम्दु शरीफ के बाद ११ मरतबा **कुल्हुवल्लाह शरीफ** पढे। तो वो अपने गुनाहोसे अैसा पाक हो जाओगा, जैसे अभी अभी अपनी मां के पेटसे पैदा हुआ हो। नीझ, नमाज़मे पढे हुअे हर हर्फ के बदलेमे उसके लीये जन्नतमे अेक शहर बनाया जाओगा। और उस शहरमे इतनी ज़ियादह हूर होंगी ज़ीनकी तअदाद अल्लाह तआला ही जाने।

२ रकआत नमाज़ पढे। हर रकआत मे अल्हम्दु शरीफ के बाद ७ मरतबा **कुल्हुवल्लाह शरीफ** पढे। नमाज़से फारीग हो, तो ७० मरतबा

**أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ**

**وَأَتُوبُ إِلَيْهِ ○**

पढे। तो अपनी जगह से उठनेसे पहेले अल्लाह तआला उसे ओर उसके मां-बाप को बख्श देगा ओर फरिस्तोको हुकम देगा के उसके लीये जन्नतमे बाग लगाओ, मकानात लगाओ और नहरे



जारी करो। वो दुन्यासे उस वकत तक नही मरेगा, जब तक ये सब देख नही लेता।

- ४ रकआत नमाज़ सुबह सादीकसे पहले पढे। हर रकआत मे **अल्हम्दु शरीफ** के बाद ३ मरतबा **इन्ना अन्जलना (सूरअे कद्र)** और ५ मरतबा **कुलहुवल्लाह शरीफ** पढे। सलाम फेरनेके बाद सजदेमे जा कर ४१ मरतबा **सुब्हानल्लाह** पढे। तो अल्लाह तआला उसकी तमाम हाजते पुरी करेगा और उसकी दूआ कबुल फरमायेगा।
- इस रातमे ये दुआ ज़ियादह पढे।  
**अल्लाहुम्म इन्नक अफुव्वुन तुहिब्बुल-अफव फअ्फो अन्नी। या गफूरो या गफूरो या गफूर।**
- हो सके तो इस रातमे **सलातुत्तस्बीह** भी पढे। इसकी बड़ी फज़ीलत हे।

चार रकात नीफल इस तरह पळहो के सुब्हानकल्लाहुम के बाद १५ बार

**سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ**

सुब्हानल्लाहे वल-हम्दोलिल्लाहे व लाइलाहा इलल्लाहो वल्लाहो अकबर पढे अउज़ो, बिस्मिल्लाह, अल्हमदो और कोइ सुरह पळहनेके बाद येही तस्बीह १० बार पळहकर रूकुअमे जायें, सुब्हान रब्बीयल अज़ीम पळहने के बाद रूकुअमे येही तस्बीह १० बार पढे फीर सीधे खडे होकर १० बार येही तस्बीह पढे,

फीर सजदेमे सुब्हान रब्बीयलआअला के बाद सजदेमे येही तस्बीह १० बार पढे,  
फीर सजदेमे से सर उठकर १० बार,  
फीर दुसरे सजदेमे १० बार।

(कुल ७५ बार अेक रकातमे तस्बीह होगी दुसरी रकातमे अल्हम्दोसे पहेले १५ बार येही तस्बीह पढे, फीर आगे उपरकी तरकीबसे चार रकात पुरी करें)

### नमाजे जनाजाका तरीका

मूकतदी इस तरह निय्यत करे : मै निय्यत करता हू इस जनाजे की नमाज की चार तकबीरो के साथ वासते अल्लाह तआला के, दुआ इस मय्यित के लिये, पीछे इस इमाम के, अब **اللَّهُ أَكْبَرُ** कहते हूअे नाफ के नीचे हाथ बांधले, अब षना पढे। इमे **وَتَعَالَى جَدُّكَ** के बाद **اللَّهُ أَكْبَرُ** कहे, फिर **وَجَلَّ ثَنَّاؤُكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ** पढे फिर बगैर हाथ उठाअे **اللَّهُ أَكْبَرُ** कहे ओर दूआ पढे, दूरूदे इब्राहीम पढे, फिर बगैर हाथ उठाअे **اللَّهُ أَكْبَرُ** कहे और हाथ लटका दे, फिर दोनो तरफ सलाम फैर दे।

बालिग मर्द व औरत के जनाजे की दुआ

**اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيرِنَا  
وَكَبِيرِنَا وَذَكْرِنَا وَأُنثِنَا، اللَّهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهِ  
عَلَى الْإِسْلَامِ، وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِيمَانِ،**

तरजुमा : इलाही! बख्श दे हमारे ज़िन्दा को और हमारे हर फौत शुदा को और हमारे हर हाज़िर को और हमारे गाइब को और हमारे छोटे को और हमारे हर बड़े को और हमारे हर मर्द को और हमारी हर औरत को। इलाही! तू हम में से जिस को ज़िन्दा रखे तो उस को इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हम में से जिस को मौत दे तो उस को इमान पर मौत दे।

नाबालीग लडके की दुआ

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَاجْعَلْهُ لَنَا أَجْرًا وَذُخْرًا وَاجْعَلْهُ  
لَنَا شَافِعًا وَشَفِّعًا.

तरजमा : इलाही! इस (लडके) को हमारे लिये आगे पहुच कर सामान करने वाला बना दे और इस को हमारे लिये अज़्र (का मूजिब) और वक़्त पर काम आने वाला बना दे और इस को हमारी सिफारिश करने वाला बना दे और वो जिस की सिफारिश मन्ज़ुर हो जाऐ।

नाबालीग लडकी की दुआ

اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَاجْعَلْهَا لَنَا أَجْرًا وَذُخْرًا  
وَاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَمُشَفِّعَةً ○

तरजमा : इलाही! इस (लडकी) को हमारे लिये आगे पहुच कर सामान करने वाली बना दे और इस को हमारे लिये अज़्र (का मूजिब) और वक़्त पर काम आने वाली बना दे और इस को हमारी सिफारिश करने वाली बना दे और वो जिस की सिफारिश मन्ज़ुर हो जाऐ।

कब्र पर मीटटी डालते वक़्त पठनेकी दुआ

कब्रपर तीन मरतबा मीटटी डाले।

पहली मरतबा मीटटी डालते वक़्त ये पढ़े

मिन्हा ख-लकनाकुम।

दुसरी मरतबा मीटटी डालते वक्त

**व फीहा नुइदुकुम।**

और तीसरी मरतबा मीटटी डालते वक्त

**व मिन्हा नुखेजुकुम तारतन् उखा।**



DEEN-E-NABI